किस किस से लड़ोगे

पंकज चौधरी

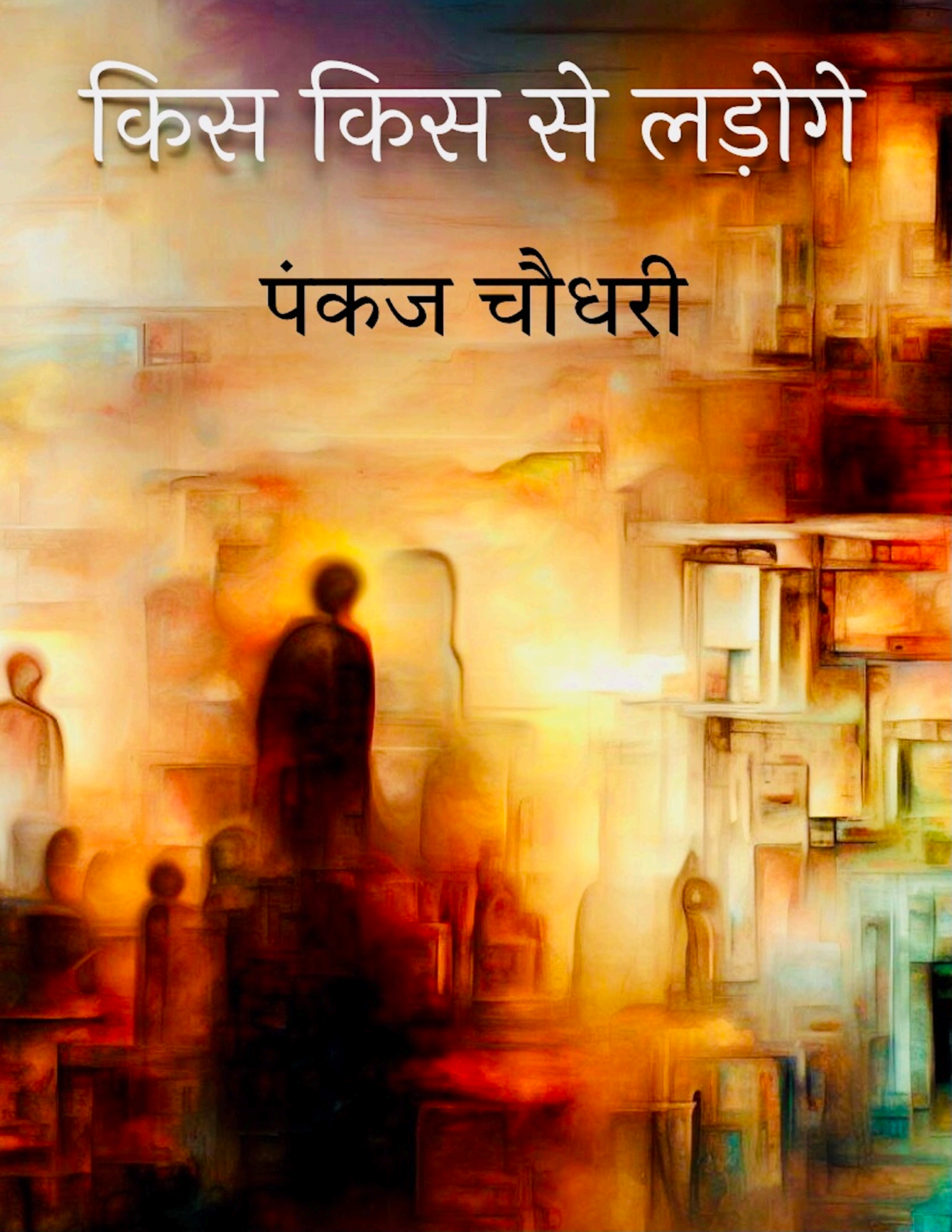

जाति के प्रश्नों को विविधता के साथ उठाता है पंकज चौधरी का काव्य-संग्रह ‘किस-किस से लड़ोगे’

कमलेश वर्मा

मेरे ख्याल से यह हिंदी का पहला संग्रह है जिसमें जाति से जुड़े सवालों को मुख्य विषय बनाया गया है।

दलित विमर्श के काव्य-संग्रहों में दलित जातियों से जुड़े प्रश्न होते हैं और उत्पीड़न करनेवालों की जाति के बारे में बात की जाती रही है। मगर पंकज चौधरी ने किसी जाति की तरफ से कोई बात नहीं कही है, बल्कि जाति के व्यावहारिक-सामाजिक रूप को अपनी कविताओं का विषय बनाया है।

जाति के प्रश्नों की रोशनी में उन्होंने समाज, साहित्य, राजनीति और संस्कृति के कुछ पक्षों पर इन कविताओं में बात की है। ठीक से पढ़ा जाए तो उनका कोई दुराग्रह किसी भी जाति के खिलाफ दिखायी नहीं पड़ता है। इतना ज़रूर है कि जाति के नाम पर होनेवाले अत्याचारों में चाहे जिस जाति की भी भागीदारी रही हो, वे उसका विरोध करते हैं।

पंकज की कविताएँ इस बात का श्रेष्ठ उदाहरण हैं कि जाति के प्रश्नों पर साफ मन से विचार करके ही जातिवाद से बचा जा सकता है।

पंकज की कविताओं में अगड़ी-पिछड़ी-दलित जातियों से लेकर मुसलमान-ईसाई-बौद्ध आदि धर्मों के जाति-विन्यास की भी परख की गयी है। वे उत्तर-दक्षिण भारत के जाति-वैविध्य की झलक अपनी कविताओं में देते हैं।

इन 58 कविताओं में कुछ के विषय अलग ज़रूर हैं, मगर ज्यादातर कविताओं का विषय जाति-विमर्श है। इस संग्रह की कविताओं में करीब 50 जातियों का जिक्र हुआ है। ये भारत की जाति-व्यवस्था के वैविध्य को प्रकट करती हैं। इतनी सारी जातियों का उल्लेख अब तक हिंदी के किसी भी कवि ने नहीं किया है।

जाति के प्रश्न पर कबीर सर्वाधिक मुखर हैं। उन्होंने जातियों का उल्लेख करते हुए हिंदी के किसी भी कवि से ज्यादा कविताएँ लिखी हैं। लगभग पौने तीन सौ कविताओं का संकलन मैंने अपनी पुस्तक 'जाति के प्रश्न पर कबीर' में किया है। मगर कबीर की कविताओं में इतनी सारी जातियों का उल्लेख नहीं मिलता है। पंकज चौधरी इस विषय पर लिखने वाले दुर्लभ कवि हैं।

पंकज चौधरी की काव्य-भाषा पर विचार करते हुए महाकवि देव की उक्ति याद आती है-'अभिधा उत्तम काव्य है...।' बहुत दिनों के बाद ऐसा कोई संग्रह दिखायी पड़ा है जिसकी भाषा को काव्य-भाषा कहलाने के लिए लक्षणा तो छोड़ दीजिए, व्यंजना

की भी ज्यादा जरूरत नहीं पड़ी है। पंकज चौधरी की काव्य-भाषा 'ध्वनि' की श्रेणी की भाषा है।

सीधी-सरल भाषा के दम पर चलती हुई उनकी कविता कई लोगों को, हो सकता है, कविता ही न लगे! हो सकता है कि इनके मूल्यांकन में कविता की गंभीर कसौटियों को कठिनाई महसूस हो!

विषय-वस्तु की चुनौती भी भाषा को कविता का दर्जा प्रदान करती है। पंकज चौधरी ने खारिज़ हो जाने की चुनौती के साथ कविता लिखने का प्रयास किया है।

विषय-वस्तु की पीड़ा से जब लगाव हो जाए तो चिंता के केंद्र में अभिव्यक्ति होती है। पंकज चौधरी को जाति-संबंधी विषय-वस्तु की पीड़ा से गहरा लगाव है। उनकी चिंता के केंद्र में इस विषय-वस्तु की सटीक अभिव्यक्ति है। इस अभिव्यक्ति के लिए वे भाषा के जिस रूप को सुविधाजनक महसूस करते हैं उसे ही काव्य-भाषा के रूप में चुनने का फैसला लिया है।

दुनिया भर में लिखी गयी कविताएँ न जाने भाषा के कितने रूपों में रची गयी हैं। रूप की नवीनताओं ने ही कविता को लंबी उम्र दी है।

(प्रोफेसर कमलेश वर्मा वरिष्ठ आलोचक एवं चिंतक हैं।)

अनुक्रम

मैं हार नहीं मानूंगा, तो तुम जीतोगे कैसे	10
संगठन	13
हिन्दी कविता के द्विजवादी प्रदेश में आपका प्रवेश दण्डनीय है	17
इण्डिया मीन्स कास्ट	21
हेडलेस पोइट्री	23
उदाहरण	28
अपने-अपने अन्धविश्वास	29
लहर है...	33
कैसा देश, कैसे-कैसे लोग	38
जस्टिन कर्णन	41
साहित्य में आरक्षण	44
दिल्ली	45
किस-किस से लड़ोगे यहाँ	49
लड़ना जरूरी है	51

पिछड़ो, तुम हमें वोट दो 54

अच्छे दिनों में 58

बुरे दिनों के लिए 61

जाति की महत्ता 63

कविता में 66

रामदेव 68

ये बदतमीज लड़कियां 70

गरमी 75

राधा मिश्रा झा 76

वे ब्राह्मणवादी नहीं हैं 77

जाति है कि जाती जहीं... 79

माँ 81

जैसा कि उसने कहा 83

यौन दासियाँ 85

जाति गिरोह में तब्दील हुआ हिन्दी साहित्य 86

नंगा कराए दंगा 88

स्त्रीवादिनी 89

कम्युनिस्ट कौन है ? 91

इस लोकतन्त्र में 93

महापुरुष 95

दोस्त और जाति 97

सात ख़ून माफ़ 99

वह सब कुछ हो गया लेकिन... 101

स्त्री विमर्श 103

बसन्त 106

खण्ड-खण्ड पाखण्ड 110

किस जाति से हो ? 112

सबसे ऊपर जाति... 115

बेशर्मी 117

द्विज महान् 118

आत्मविश्वास 120

तुम मुरझाओ नहीं 122

चोर 124

मूर्तिभंजकों की आस्था 125

शुभ-अशुभ 126

कमज़ोर ताक़तवर 129

पर उपदेश... 130

सछूत भारत, अछूत भारत 132

शेक्सपीयर इज़ डेड 136

इमोशनल अत्याचार 137

भ्रष्टाचार तो एक बहाना है 138

त्रासदी: एक महान् संकट 140

अँधेर नगरी 143

लोक-लाज 147

मैं हार नहीं मानूंगा, तो तुम जीतोगे कैसे

मैं हार नहीं मानूँगा

तो तुम जीतोगे कैसे

मैं रोऊँगा नहीं

तो तुम हँसोगे कैसे

मैं दुखी दिखूँगा ही नहीं

तो तुम सुख की अनुभूति करोगे कैसे

मैं ताली ही नहीं बजाऊंगा

तो तुम ताल मिलाओगे कैसे

मैं अभिशप्त नायक ही सही

लेकिन तू तो खलनायक से भी कम नहीं

मैं खुद्दारी की प्रतिमूर्ति ही सही

लेकिन तू तो किसी पतित से कम नहीं

माना कि प्रकृति भी मेरे साथ नहीं

लेकिन प्रकृति भी तो सदैव तेरी दास नहीं

तुम मुझे क्या अपमानित करोगे

तुम तो खुद सम्मानित नहीं

तुम मुझे औकात में क्या रखोगे

तुम्हारी खुद की तो कोई औकात नहीं

तुम मुझे क्या डराओगे

तुम तो खुद डरते हो मुझसे

मेरे ऊपर तुम क्या शक करोगे

विश्वास तो तुझे खुद अपने ऊपर भी नहीं